स्वर

[illegible]

जसवतराय जैनी

ने

ान् श्रीमुनिवल्लभविजयजीमहाराजकी
खास प्रेरणा और आज्ञा से रचा

और

बनारसी दास जैनी

जनरल बुक डिपो, लाहौर

ने

छपवाया

—o—

वीर सम्वत् २४३९, आत्म सम्वत् १७

ल्य दो पैसे] [उटीवार २०००

बाम्बे मैशीन प्रैस, लाहौर

कराकर नि... ... ...मा ...रन के ...ग
को सहायता से हमने यह नवग्रहशांति हिन्दुस्तानी भाषा
गुटका रूप में छपवाई है, इसमें प्रत्येक ग्रह की दशा में य
दान की वस्तुयें आदि विधिवत् लिखी हैं सर्व साधारण
हमने इसका मूल्य केवल डेढ़ आना -)॥ रखा है, ग्राहके
२०से अधिक खरीदे, उसेस एक आना ही प्रति कापी लिय

दयानंदकुतर्कतिमिरतर

विदित हो कि उक्त नाम की पुस्तक श्रीमान् श्रीमु
विजयजीकृत हिंदी भाषामें छपकर त्यार होगई है। उर्दू
नाम की पुस्तक से कई प्रकार की विशेषतायें जो उर्दू
आसकती थीं, इस में की गई हैं, हिंदी भाषा पढ़ने वालों
लेना चाहिये। तपगच्छपट्टधारी श्री १००८श्रीमद्वि
महाराज की फोटो सहित मूल्य केवल छ आना रख

जसवंतर

श्रीवीतरागाय नमः।

जैनबालोपदेश ❀

स्वर

आ इ ई उ ऊ

ॠ ए ऐ ओ औ

अं अः

व्यजन

ख ग घ ङ च छ

झ ञ ट ठ ड ढ

नोट–ओ औ और झ ञ ऐसे भी होते हैं।

पकको चाहियेकि इनसबअक्षरों का अभ्यासकरावें औरलिखवावें

त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला [illegible] लौ लं लः

स्वरमात्रा

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः
ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः

१, २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

अ

तन मन धन वन जन जल मल
छल फल खल नर वर कर डर
घर रस वस जस फस दस
कमल वचन कपट खलल

घर चल, सच मन धर, कपट मत कर, जप तप कर, मन वच तन वस रख। रथ पर चढ चल॥

आ

माल काल छाल फाल जाल
तान मान धान वान जान
जला भला चला तला कला
हरा भरा करा मरा खरा
ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ। जाला
ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः
ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः
ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः
ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ णं णः

त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः
ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ व
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ श
ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ ष
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ स
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ ह

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

अ

तन मन धन वन जन जल मल

छल फल खल नर वर कर डर

घर रस वस जस फस दस

कमल वचन कपट खलल

घर चल, सच मन धर, कपट मत कर, जप तप कर, मन वच तन वस रख । रथ पर चढ चल ॥

आ

माल काल छाल फाल जाल

तान मान धान वान जान

जला भला चला तला कला

हरा भरा करा मरा खरा

काला माला ताला वाला चूला

राजा ताजा खाजा वाजा गाजा

आगम नागन गायन रागन फागन

गागर चाकर ठाकर चामर सागर

चारण तारण दारण धारण कारण

उकार अकार जनाव खराव उदास
वगार उदार अतार नवाव पचाम
समता ममता गमता रमता नमता

पाठशाला जाकर पाठ याद कर। मान मत कर। दया दान कर। रात भर मत जाग। सदा मल कर। कपाय चार जान। समता धारण कर। जाल मत-लगा। माता का कहा मान। आगम ४५ जान॥

इ

जिन दिन चिर विप हित
कपि ससि रवि पति अरि
तिथि मिति निधि विधि गिरि
लिखना मिटना विवाह विहार
मिलाप कीर्ति हरिदास शीमपार

अभिमान मत कर। सामायिक धारण कर जिन भजन कर। हित मित वचन कह। दिननाथ छिर गया। जिन जगनाथ का शरण धार। आश्रिक आहार मत कर। जिन वचन मन धार। गिरिनार पर पद चल॥

ई

गीत रीत पीत वीत मीत शीत
दीन हीन खीन मीन तीन चीन
ताई माई भाई नाई गाई राई
शरीर समीर फकीर अमीर करीर
गरीव नसीव अजीव तवीव करीव
पीतल शीतल

लड़ाई मत कर। सब की भलाई कर। वीत-राग भगवान का जाप जप। गाली मत निकाल मीठी बात कर। शीतलनाथ भगवान् दसमा अवतार जान। दीन हीन पर दया कर। बड़ा भाई पिता समान जान। समकित धार कर मायाचारी मत बन। पानी छानकर पी। रात आगई आहारका परिहार कर

उ

सुख दुख मुख गुण सुर
पशु कटु धनु मनु वहु
गुरु शुरु साधु पुरुष धनुष

दुख सहन करना सीख। साधु मुनिराजकी टहल कर। गुरु महाराज की आशातना मतकर।

दीन दुखिया पर करुणा कर। किसी की बुराई मत कर। गुरुका वचन हितकारी मानकर सिरपर धार। सुमति नाथ महाराज आज कर मुझ भवसागर पार। कटुवचन मत कह। शुभ करणी बिना जीवन पशु समान जान

ऊ

रूप धूप कूप भूप चूप
रूपा जूता माजू राजू भूमी
भूषण भषण ममल सूरत

झूठी बात मत कर। किसी का धन मत लूट जरूर भला कर। भला कर भूल जा। पढ़ा हुआ पाठ मत भूल। अजितनाथ दूसरा अवतार पूज। जिन् वानी अनुसार फल फूल पूजा जान। कुसुममाल करी पूजा रचा॥

ऋ

नृप घृत तृण मृग सृज
कृपा तृपा मृता कृता वृथा
धृति अमृत मृदु पृथिवी सुकृत

घृणा मत कर। धन तृण समान जान। दीन हीन पर कृपा रख। अनृत वचन परिहर। मृदु वचन

सुखदाई जान । नरभव वृथा मत कर । घृत घी का नाम जान । जिनवानी अमृत समान मान । मृग हिरण का नाम । ऋण बुरा जान । ऋतु अनुसार खान पान कर ॥

ए

रेल तेल मेल वेल खेल
केला चेला मेरा तेरा बेटा
बेडी तेली धेनु पेटु रेलु

तेल भी एक विगय जान । गुणी बेटा एक ही भला । किसी का धन देख कर खेद मत कर । नेमनाथ जिनदेव बावीसमा अवतार जान । अपने देश का वेश पहन । जिनदेव की सेवा करनी चाहिये । अनाचारी के साथ मत चल । नीचे देख कर कीडी आदिक की जान बचाते हुए दया के भाव से चलना चाहिये ॥

ऐ

वैर जैन बैल दैव शैव
मैना मैला जैसा पैसा कैसा
वैसाख सदैव तैजस मैथुन मैदान

जिनवैन माननै वाला जैनी है। जिसके हृदय जिनबचन नहीं, वह जैनी नहीं। जैनमतका मूल दया है। जैन सनातन मत है। जैसे गुरु वैसे चेले। धन हाथ पग की मैल है। भले पुरुष किसी से वैर नहीं रखते। किसी से वैर मत रख। दैव बली है। मैला कुचैला कपडा मत पहन ॥

ओ

चोर मोर रोग शोक दोष
तोता रोटी मोती मोट भोले

सत्र बोल। पूरा तोल। किसी को दोष मत दो। अपने किये का फल है। चोरी करना पाप है। धन के नाश होने पर बहुत शोक मत कर। अपनी पोथी मैली मत कर। मोर बोलता है। रात को भोजन करना महा पाप है। पानी छान कर पीना रोटी रात को न खानी जैनी की निशानी है।

औ

चौग चौथ मौन और गौर
औषध चौदह चौबीस पकौड़ी

कौड़ा बोल मत बोल। दुःखी जीव को औषध दान कर। दान के चार भेद जान। जैन साधु लोभी नहीं होते कौड़ी मात्र अपने पास नहीं रखते। मौत सब पर बली है। चौथ की छमछरी करनी जैन की रीति है ॥

अ अः

अंग संग रंग फंद छंद पांच चिंता परंतु संसार

अतः, अंतःकरण, परः, पुनः, पुरः,

चंदनबाला ने महावीर भगवान को उड़द के बाकले दिये। चंदनबाला महासती थी। मंदिर जी जाकर जिनराज की पूजन जल चावल, केसर, चंदन धूप, दीप, फल, फूल आदिक से कर। जैन आगम में मंदिर बनवाना कथन किया है। रायपसेणी जैन आगम में सुरियाभदेव की तरह पूजा करनी कही है। संसार दुःखों की खान है। चिंता चिता समान है।

अंजना सुन्दरी की कथा ॥

जब पवनंजय अंजना सुन्दरी को विवाह कर अपने नगर में ले आया, तो पीछे किसी अभिमान के वशीभूत हो मन से भी उसकी सार संभाल न

करता भया, इससे अजना सुन्दरी को अतीव पीडा हुई और दु ख में काल गुजारने लगी, एकदा समय रावण का दूत पवनजय के पिता पास आकर कहने लगा, कि 'वरुण के साथ लडाई करने को जाना है, इस कारण आप को रावण ने बुलाया है, इस पर पवनजय पिता से हुकम लेकर माता को सविनय वदना कर चल पडा, परन्तु चरणों में पडी हुई और शरणागत अजना का अनादर ही किया ॥

पहिला पडाव एक सरोवर के निकट किया और रात के समय पवनंजय उस सरोवर पर एक चकवी को चकवे के वियोग से रुदन करती को सुनता भया, उस का रोना सुनकर अपनी अगना भी याद आई, और उसी समय अंजना के महल में आया और देखता है कि अजना पति के वियोग से शोकसागर में डूबी हुई केश विखरे हुए बावली पडी है, वह रात पवनजय ने अजना के पास ही गुजारी और उसको शाति किया और चलने के समय अपने आगमन की निशानी रूप अंगूठी उस को दे गया, दैवयोग से उसी रात पवनजय से अजना

में संतान का कारण भया, पीछे सास ने अजना को अनादर से कहा कि कुलको कलंक लगाने वाला यह उदर कहां से बड़ा किया है, तो उसने पति की वह दी हुई निशानी दिखाई, परंतु सास ने एक न माना और अपमान कर काले कपड़े पहना काले ही रथमें चढा किसी वन में छोडने को नौकर को हुकम दिया, माता पिता आदिक से भी आनादर की हुई वनो में भ्रमती और अपने पैरों से निकले रुधिर से मानों भूमि को अंकित करती हुई वह एक उजाड़ बीयाबान जंगल में पहुची, अनेक तकलीफ सहन करती हुई भी वह अपने शील की पालना करती भई। वनकी एक गुफा में बालक पैदा हुआ, और उसका मामा अपने नगर अनुरूहपुरमें लेगया, इस कारण बालक का नाम हनुमान पड गया और इस तरह से वह मामा के घर बढ़ने लगा॥

इतने मे रावणकी मदद करके पवनजय नगर में आया और अपनी अंजना को निकाले जाने का सुन अतीव खेद अंजना सुंदरीके वियोग से पवनजय पड़कर मरनेके भाव की खबर सुन कर हनुमान को

रता मामा अजना और हनुमान को लेकर आया,देखकर
ई ओवको अतीव आनद हुआ,हनुमान का मामा उन
वण रव को अपने घर ले गया और कालातर में हनुमान
गा, और अजना सहित पवनजय अपने नगर में आय
स कओर माता पिता को वदना की,इतनेमें सीता का हर
वनजहुआ और हनुमान रामचदजी की सहायता करता भय
दना पीछे पवनजयराजपाट हनुमानको दे ससार छो
रणा शिवपद को पहुचा और अजना भी मुनि चदसूरि
पास संयम धार सब उपाधि का नाश कर पति का
अनुगमन करती भई,माता पिताकी तरह हनुमानभी
त के चिरकाल पृथिवी का पालन कर अपने बेटे को राज
ो च अभिषेक कर मुनि देवसूरि के पास सयम अगीका
स क कर महा तप करता हुआ निमलाचल पर आया औ
ोर उ अविनाशी गति को सिधारा,इति अजना कथा ॥
सता है।

भजन

हूजी हूई न ऐश बहार परानी सदा न ऐश बहार रे।
नजय ने काले केश रहेसि महा गुजारी और
सको शांति किया औ सुत परवार रे,सद य
पैने र मले तन अपने,ओडक होसीछारेरे,सदा स
ो दे ग हे साध चलेगा, और न जासी लारे,सद ना
धाराम र जिनवर जपले,हो जासी भवसे पारे

বে দয়া, নামে রুচি ভক্তি ভগবানে।

—— o ——

"কোন প্রাণী কখন ভীত না হয়, কোন প্রাণী হইতেও তাহার কখনও কোন ভয়ের সম্ভাবনা নাই।" ভীষ্ম বাক্য।

—— o ——

"ন চ ধর্ম্ম দয়াপর।"

সর্ব্বজীবে দয়াই তপস্যা।

অহিংসাই পরম ধর্ম্ম।

—— o ——

উৎসর্গ পত্র।

৺স্বর্গগতা কেশব কুমারী দেবীর

নামে

ভক্তির সহিত জীবে-দয়া

গ্রন্থ

উৎসর্গ করিলাম।

আমার নিবেদন।

আমি সমগ্র জীব মণ্ডলী কে প্রণাম করিতেছি। জীবগণকে দেখিলেই জীবের স্রষ্টা ভগবানকে মনে পড়ে। মানুষ পশু, পক্ষী, কীট পতঙ্গ সকলেই এক পরম পিতা পরমেশ্বর ও জগজ্জননী ভগবতীর সন্তান। আমি নিজে শাক্ত এবং প্রসিদ্ধ শক্তি উপাসক সাধক সর্ব্বানন্দের নিত্য বংশে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি। নিজের জীবনে অনেক ঘাত প্রতিঘাত পাইয়াছি [illegible] জীবগুলি কেন পরস্পর পরস্পরকে হনন করে তাহা ভাবিয়া স্থির করিতেও পারি নাই। আমাদের নিজ গৃহে ও মায়ের পূজায় এবং ভগবানের সেবার নিকট বলি হয় কিন্তু ঐ বলির সময়ে বরাবর আমার প্রাণের ভিতরে কেমন করিয়া উঠিত। এখন বিচার করিয়া দেখিতেছি যে এই পশু বধ আমাদের পক্ষে ধর্ম্ম হানিকর। অতএব জীবের প্রতি যাহাতে জীবের দয়া হইতে পারে তাহার জন্য এই ক্ষুদ্র পুস্তিকা প্রচার করিলাম। আমি পূর্ব্বে ও বৈজ্ঞানিক উপায়ে মানুষের স্বাভাবিক খাদ্য কি? সেই সম্বন্ধে এক খানি পুস্তক প্রণয়ণ করি। শ্রীযুক্ত রাজ কুমার সিংহ মহাশয় তাঁহার স্বর্গগতা পত্নী কেশর কুমারী দেবীর আত্মার কল্যানার্থে এই পুস্তক প্রকাশ ও যাহাতে সাধারণে উহা প্রচার হয় তাহার ব্যয় ভার গ্রহণ করায় আমি তাঁহাকে আন্তরিক ধন্যবাদ দিতেছি। কোন জীবকেই যে আমাদের হত্যা করা উচিৎ নহে এবং অহিংসাই আমাদের পরম ধর্ম্ম তাহা বুঝিতে পারিয়া এই গ্রন্থ প্রচার করিলাম। অবশ্য বিরুদ্ধ তার্কিকেরা আমার ক্ষমা করিবেন। ইতি—

শ্রীতারা নাথ রায় চৌধুরী।

জীবে দয়া।



"জীবে দয়া নামে রুচি ভক্তি ভগবানে।"



শ্রীকৃষ্ণ-উক্তি।

"আমার মতে অহিংসাই পরম ধর্ম। বরং মিথ্যা বাক্য প্রয়োগ করা যাইতে পারে, কিন্তু প্রাণি হিংসা কদাচ কর্ত্তব্য নহে।"



মানুষ শ্রেষ্ঠ।

আমরা দেখিতে পাই এ জগতের চারিদিকে মানব যে নিয়ত পশু হননাদি হিংসাত্মক নিন্দনীয় কার্য্য করিয়া ও আপনাকে যে ভগবানের সৃষ্ট পদার্থের মধ্যে শ্রেষ্ঠ তাহা জোর করিয়া বলিতে চাহে। আমরা যখন দেখিতে পাই, মানবগণ নিরীহ পশুগণকে হনন করে, এবং নিয়ত নীচ কার্য্য করে, যাহা অধর্ম্ম ও অন্যায় ও পাপজনক তাহা করে, তখন আমাদের মনে সন্দেহ হয় যে এই মানবকুল যাহারা ভগবানের সৃষ্ট জীবের মধ্যে জ্ঞানে বিজ্ঞানে গৌরবান্বিত মানব, ইহারাই সেই মানব।

মানব কে? মন—সম্পদের অধিকারী, অর্থাৎ মননাদি সম্পন্ন বিবেকজ্ঞান ও বিচারশীল যে জীব সেই মানব। যাহার মনন শক্তি দ্বারা সমস্ত বিচার করিতে পারে ঈশ্বরের মহিমা দেখিয়া, তাঁহার সৃষ্টির প্রতি সহানুভূতিযুক্ত হইতে পারে, সৃষ্ট জীব মাত্রকেই রক্ষণ পালন করিতে পারে, সেই মানবই শ্রেষ্ঠ। যদি অপর কুপ্রবৃত্তি এই মানব, অধর্ম্মকর, হিংসাপূর্ণ সম্ভাষণ ও অপবিত্র পশু হননাদি হিংস্র কার্য্যগুলি করে, তাহা হইলে তাহাদের ঐ চরিত্র দেখিয়া কি আমাদের বিচার করা উচিত এই মানবের শ্রেষ্ঠত্ব যদি জানিব, নিকৃষ্ট

পাপগুলি বর্ত্তমান দেখি তাহা হইলে তাহাতে কি আমাদের দু নি
হওয়া নিন্দনীয় ? না।

আমরা মানুষ। আমরা শ্রেষ্ঠ। সর্ব্বজীবই আমাদের নিকট আশ্রয়
দয়া প্রার্থনা করে। আমরা দেবদুর্ল্লভ পূত চরিত্র সম্পদ পাইয়াছি। আম
যদি সেই দেব আশীর্ব্বাদ পাইয়াও, ভগবানের প্রেম লাভ করিয়াও, সমস্
সমস্ত জ্ঞান ঐশ্বর্য্য লাভ করিয়াও তাঁহার মহিমা বুঝিতে পারিয়াও, সমস্ত জী
মণ্ডলীর প্রতি আমাদিগের ঈশ্বরের বিধান অনুসারে স্নেহশীল হওয়া উচি
এইরূপ জ্ঞান পাইয়াও যদি তাহার অপব্যবহার করি, তাহা হইলে মনুষ্য চরিত
আর অধিক কি কলঙ্ক হইতে পারে ?

ঈশ্বর যেমন মানুষকে সৃজন করিয়াছেন তেমন পশু, পক্ষী কীট, পতঙ্
বৃক্ষ, লতা সর্প প্রভৃতি স্থাবর জঙ্গমাত্মক সমস্ত বসুন্ধরা সৃজন করিয়াছেন
আমরা যেমন বিধাতার সৃষ্টিতে সুখে ও শান্তিতে বাস করিতে চাহি, আম
যেমন সর্ব্বপ্রকার আনন্দ প্রার্থনা করি, ঐ সকল সৃষ্ট জীবও সেইরূপ সুখ
শান্তি এবং আনন্দ প্রার্থনা করে। আমরা ঈশ্বরের নিকট যেমন সক
বিষয়ের জন্য দাবী করিতে পারি অপর জীবও সেইরূপ দাবী করিতে পারে
আমরা জীবের মধ্যে শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ প্রধান হইয়াও আমাদিগের হইতে নী
জীবগুলির প্রতি কি অত্যাচার করা উচিৎ ? আমরা প্রজ্ঞা লাভ করিয়াও য
পশু হননাদি কার্য্য করিয়া থাকি তাহা হইলে উহাতে ঈশ্বরের প্রতি
অত্যাচার করা হয়। কারণ যে পুত্রের প্রতি অত্যাচার করে সে পিতার প্রতি
অত্যাচার করে যে হেতু পিতা ও পুত্র এক। পুত্রের প্রতি অত্যাচার করিলে
পিতারই মানের হানি করা হয়। তাহাতে আপনার ও মর্য্যাদার হানি হ
কেননা নিজের অযশ হইলে পশ্চাতে পিতারই অযশ হইয়া থাকে।

মানুষের নিকট দুর্ব্ব্যবহার লাভ করিয়া অপর জীব জন্তু গুলি দুঃখ ভো
করিবে উহা ঈশ্বরের অভিপ্রেত নহে। মানুষের হৃদয়ে যদি ঈশ্বর ভক্তি
থাকে তাহা হইলে মানুষ কখনও অন্য জীবের প্রতি অত্যাচার করিতে পারে
কেননা ভগবান সকলের পিতা। মানুষ ও পশু পক্ষী প্রভৃতি সকলেই তাঁহা
নিকট সমান। কারণ তিনি করুণাবশতঃ এই জীব মণ্ডলীকে সৃজ
করিয়াছেন, এবং সমগ্র বসুধা তাঁহার প্রেম লাভ করিয়া ধন্য হইয়াছে। তি

প্রত্যেক জীবের অন্তরে বাস করিতেছেন। তিনি সৃষ্টির অণু পরমাণুতে ওতপ্রোত ভাবে মিশিয়া রহিয়াছেন। সেই পরম কারুণিক পরম পিতা পরমেশ্বর, যেই চক্ষে মানুষকে দর্শন করেন সেই চক্ষে অন্য জীবকেও দর্শন করেন। তাঁহার নিকট বৈষম্য নাই। ভেদ নাই। যাঁহারা বলেন, মানুষ ও পশু পক্ষী ঈশ্বরের সৃষ্টিতে এক সমান করুণার পাত্র নহে, তাহাদের ঐ অশ্রদ্ধের কথা শুনিতেও পাপ। তাহাদের ঐ বাক্য সর্ব্বদা অবজ্ঞার যোগ্য। কারণ সর্ব্বজ্ঞ সর্ব্বদর্শী, সর্ব্ব জীব স্রষ্টা ভগবান দেশ কাল পাত্র ভেদ রহিত হইয়া পরিপূর্ণ ও মহান্, তিনি কখনও সংকীর্ণচেতা ও নীচ বাসনা যুক্ত মানবের ন্যায়, স্বার্থপর ও নীচ নহেন।

সৃষ্টি তাঁহার অর্থাৎ ঈশ্বরের অভিব্যক্তি বা প্রকাশ। সকল জীবই তাঁহার নিকট সমান। তিনি সত্য স্বরূপ এবং সৎ যাহা সমগ্র ব্রহ্মাণ্ড সৃজন করিয়াছেন। আমরা মানুষ, তাহা যদি বুঝিতে না পারিয়া, কেবল মনে করি, আমরাই জীব জগতের মধ্যে শ্রেষ্ঠ এবং অন্য জীবগুলির প্রতি আমাদের যথেষ্ট ব্যবহার করিবার ক্ষমতা আছে, তাহা হইলে নিশ্চয় জানিও ঐ ধারণা আমাদের ভুল। আমরা স্বার্থান্ধ হইয়া, অজ্ঞানী হইয়া ঐ রূপ ধারণা করি। উহঃ উহা কি ভ্রান্তি। কেন না ঈশ্বর যখন আমাদিগকে সৃজন করিয়াছেন তখন সকল জীবই তাঁহার সৃজিত বলিয়া সকলের প্রতি আমাদের করুণা করা উচিৎ। যেহেতু আমরাও যে ঈশ্বরের করুণা প্রার্থনা করি। সকলেই ঈশ্বরের নিকট করুণা প্রার্থনা করিতে পারে। মানুষ বিধাতার বিধান অনুযায়ী সকল জীবের প্রতি স্নেহবান ও প্রেমশীল হইতে বাধ্য।

আমরা প্রতি পদে পদে জগতে আমাদের শ্রেষ্ঠত্ব প্রতিপাদন করিতে চাহি কিন্তু যদি আমরা অন্য জীবের প্রতি হিংসা করি, অপর জীবকে অন্যায় রূপে ব্যতিব্যস্ত করিয়া গুলি হননাদি দ্বারা নষ্ট করি কিম্বা আমাদের উৎপীড়নে জীব সন্তান অস্থির হইয়া পড়ে, তাহা হইলে আমাদের জ্ঞান বিদ্যা লাভে লাভ কি? জ্ঞানের অর্থ কি? যে বস্তু দ্বারা জীব ঈশ্বরের অধীন হয় অর্থাৎ ঈশ্বরকে লাভ করিতে পারে, উহাই জ্ঞান। উহা ব্যতীত আর সকলি অজ্ঞান। মানবের মনুষ্যত্ব ঈশ্বরানুরাগ ও বিবেক জ্ঞান দ্বারাই পরিস্ফুট হইয়া থাকে।

ততক্ষণ পর্য্যন্ত মানুষ সমস্ত জগৎ ও জীবের প্রতি প্রেম প্রচার করিবে সেই পর্য্যন্ত মানুষ ভগবানের প্রেম লাভ করিতে পারিবে না। অতএব ইহা বলা যায় যে মানুষ শ্রেষ্ঠ সত্য কিন্তু অন্য জীবের প্রতি যে পর্য্যন্ত না দয়ালু হইবে সেই পর্য্যন্ত মানুষ শ্রেষ্ঠ নহে।

হিংসা।

হনন শব্দ হইতে এই হিংসার উৎপত্তি। অপরকে হনন্ বা নাশ করাই হিংসা। যে এই হিংসাকে আশ্রয় করিয়া জীবদিগকে যে কোন ভাবেই হিংসা করে, সে জীবহত্যার পাপে লিপ্ত হয়। হিংসুক কখনও প্রেম লাভ করিতে পারে না। অন্ধ যেমন বিমল চন্দ্রজ্যোতি দর্শন করিতে পারে না সেইরূপ যাহার হৃদয়ে হিংসা রহিয়াছে সেও কখনও ভগবানের দয়ালাভ করিতে পারে না। হিংসায় চিত্ত দূষিত হয়। অতএব দূষিত চিত্তে ঈশ্বরের পূজা করিতে যাওয়া আর ভস্মে ঘৃত ঢালা একই কথা। পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে মানব পুত্রের প্রতি হিংসা করিয়া যদি পিতার বিশ্বাসভাজন হইতে চাহেন তিনি বৃক্ষের মূল কাটিয়া অগ্রভাগে জল সেচন করেন।

হিংসা ধর্ম্মকার্য্যের অন্তরায়। আমাদের সমস্ত শাস্ত্রই এ কথা এক বাক্যে স্বীকার করেন। বিশেষ কাম ক্রোধ, লোভাদি রিপুকে দমন করিতে না পারিলে কেহই ঈশ্বরের কৃপালাভ করিতে পারেন না। এ জগতে আসিয়া ঈশ্বরের অনুগ্রহে শান্তিময় জীবন যাপন করিয়া সংসারে সুখময় করাই মানবের অভিপ্রায় কিন্তু হৃদয়ে যদি সর্ব্বদা হিংসাদি প্রবল থাকে তাহা হইলে মানুষ কখনও সংসারে সুখ পায় না। একটা আত্ম বিবেচনাও ত মানুষের হওয়া উচিত? পশুতে ও মানুষে তফাৎ কি? মানুষের বিবেচনা শক্তি আছে, পশুর তাহা নাই। আমরাও যদি সেই বিবেচনা শূন্য হইয়া দুর্ব্বল ও অসহায় জীবগুলিকে ধরিয়া নিধন করি এবং পশুগুলিকে হিংসা করিয়া বুদ্ধির পরিচয় প্রদান করি তাহা হইলে, তাহা কি আমরা মানব! মানবের গুণের পরিচয় হয় ?

আমরা আর্য্য জাতি। আমরা সকল জীব অপেক্ষা আপনাদের শ্রেষ্ঠত্বের গর্ব্ব করি কিন্তু আমাদের চিত্ত যদি হীন ও অসূয়াদিতে পূর্ণ হয়, তাহা হইলে আমাদিগের শ্রেষ্ঠত্ব কি বজায় থাকে?

বড়ই দুঃখের বিষয় যে আমরা সত্য সত্যই অতিশয় শোচনীয় অবস্থায় আসিয়া দাঁড়াইয়াছি। হিন্দুজাতিই ধর্ম্ম দ্বারা জগতে শ্রেষ্ঠ ছিল। সর্ব্বজীবে দয়া, সর্ব্বজীবে ক্ষমা ইহাই হিন্দু জাতির ভূষণ ছিল, এই হিন্দু জাতি আবহমান কাল আপনাদের ধর্ম্ম দাক্ষিণ্যের জন্যই জগতে শ্রেষ্ঠ হইয়া রহিয়াছিল, আর সেই হিন্দুজাতি—আমরা সমস্ত ধর্ম্ম হারাইয়া কি শোচনীয়ই হইয়াছি। হিংসা দ্বেষ এখন আমাদের চিত্তের অলঙ্কার। আমরা নিয়ত নিন্দনীয় পশুবধ প্রভৃতি পাপকার্য্য দ্বারা এতটা অধঃপাতে যাইতেছি যে প্রাচীন ঋষিদিগের নামেও কলঙ্কারোপ করিতে আমরা পশ্চাৎপদ নহি—কেন না অপবিত্র স্বার্থার্থ করিয়া আমরা আজ শাস্ত্র বাক্যও কলুষিত করিতে চেষ্টা করিতেছি। আমরা কামলালসায় অন্ধ হইয়াছি। নিন্দার কাজ করিতে কুণ্ঠিত হইতেছি না। দিন দিন পাপের পথে অগ্রসর হইতেছি। এই শোচনীয় অবস্থার জন্যে আমাদের লজ্জিত হওয়া উচিত নহে কি?

হিংসা কেন করি?

আমরা পশুবধ করি শুধু খাইবার জন্য। আমরা পশুগুলিকে অতি উপাদেয় বোধে অতি তৃপ্তির সহিত ভক্ষণ করি, অথচ ভাবি না ঐ পশুদেহ ও মানবদেহে কোন প্রভেদ নাই। যে রক্ত, মাংস, মজ্জা অস্থি দ্বারা আমাদের মানুষের দেহ গঠিত, সেই রক্ত মাংস, মজ্জা, অস্থি দ্বারা পশুদেহও গঠিত। যে পুরুষ ও রমণীর রজ ও বীর্য্য হইতে যৌন সম্মিলনে মানব উৎপন্ন হয়, অপর পশু পক্ষীও সেই প্রকারে উৎপন্ন হয়। ঐ রজ ও বীর্য্যের পরিণামই জীবদেহ। যে বীর্য্য ও রজ হইতে আমরা উৎপন্ন, তাহাই আমরা আদরের সহিত ভক্ষণ করি। কি ঘৃণা। কি ঘৃণা! এই পশু মাংসগুলি ভক্ষণ করিবার জন্যই আমরা পশুগণকে হনন করি। এবং তাহাদিগকে এমন কি দেবতার নিকটও বলি প্রদান করিয়া থাকি। পশুবলির একমাত্র কারণই হইতেছে পশু মাংস ভক্ষণ। এখন দেখিতে চেষ্টা করিব যে এই মানবের ন্যায় সব উপকরণে নির্ম্মিত পশুসকল ভক্ষণ করিয়া আমরা কি রাক্ষসবৃত্তির পরিচয় দিই না? সিংহ ব্যাঘ্রাদি জন্তুগণের বুদ্ধি বিবেচনা নাই কিন্তু বুদ্ধি বিবেচনাশালী আমরা যদি তাহাদের মতন পশু হনন করি তবে সে সকল পশু ও আমাদিগেতে কি পার্থক্য আছে?

হিন্দু ও অপর জাতি।

হিন্দুগণ প্রাচীনকাল হইতেই জীবহিংসা যে পাপ ও অহিংসাই পরম ধর্ম তাহা মানিয়া আসিয়াছে। কিন্তু অধুনাতন হিন্দুরা তাহা মানেন না এব পবিত্র স্বর্গভূমি তুল্য "ভারতভূমিতে" জন্মগ্রহণ করিয়া জীবের প্রতি অবশ্য কর্ত্তব্য ধর্ম, তাহা পরিত্যাগ করিতেছে অথচ যে সকল পাশ্চাত্য জাতিদে অনেক হিন্দু আছেন, যাহারা ঘৃণা করেন, সেই পাশ্চাত্য দেশের কো কোটী ব্যক্তি সেই হিংসা ও পশুবধাদি নিবারণের জন্য তনুমন উৎস করিতেছেন।

হিন্দুগণের নিকট জীবহিংসা সম্বন্ধে আর কি নূতন কথা বলিব আমাদের প্রতি ধর্ম্মকার্য্যেই হিংসা রহিত সম্পন্ন করিবার উপদেশ রহিয়াে তবুও আমরা পাপে হতজ্ঞান হইয়া আর্য্য বংশধর হইয়াও পশু হনন করি আ ঐ পাশ্চাত্য দেশবাসীগণ—যে দেশের মনিষীগণ পুনঃ পুনঃ জীবহিংসা নিষে করিয়া গিয়াছেন; সেই পবিত্র ভূমি ভারতবর্ষে জন্মগ্রহণ করিয়া আম যাহারা পশুবধ করি, তাহাদিগের ধর্ম্মকে উপহাস করিতে বসিতেছে যে পাশ্চাত্য দেশবাসীগণ আজ পশুক্লেশ নিবারণ ও পশুবধ নিবারণের জন্য ক প্রযত্ন করিতেছেন। পাশ্চাত্য দেশে এতজ্জন্য কত গ্রন্থ, কত সভা সমিতি এ কত আইনও প্রচলন হইয়াছে।

আমাদের দেশের বৈষ্ণব সাধুগণ, শৈবগণ ও ধর্ম্মপ্রাণ জৈনগণও নিন্দনীয় পশুবধ নিবারণের জন্য অনেকে প্রয়াসী হইয়াছেন। জীবহিং নিবারণের জন্য জৈন ধর্ম্মাবলম্বী মহাত্মাগণ বিশেষরূপে চেষ্টা করিতেছেন তাহাদের এই উদ্যোগ আয়োজন আমরা সর্ব্বদা শ্রবণ না করি। ধর্ম্মশাস্ত্রে জী হিংসা যে নিন্দনীয়, তাহা পুনঃ পুনঃ বলিয়াগিয়াছে। অথচ আমরা বাঙ্গা সর্ব্বপ্রকার ধর্ম্মাচার বিধি মাত্র করিলেও কিন্তু আমাদের বাঙ্গালার হিন্দু সমাজে জীবহিংসা অতিশয় বেশী। আমরা শাক্ত। অধিকাংশ বাঙ্গালীই মা উপাসক। অথচ আমরা বাঙ্গালীই বেশী জীবকে হনন করি এবং পশুমা ভক্ষণ করি। আমাদেরই উচিত সর্ব্বাগ্রে জীবহিংসা ত্যাগ করা। মহাপ্র চৈতন্য, ভগবান রামকৃষ্ণ প্রভৃতি মহাত্মাগণ আমাদের দেশে জন্মগ্রহণ করি

আমাদিগকে পবিত্র করিয়া গিয়াছেন, আমরা সেই সকল মহাত্মাদিগের উপদেশানুসারে চলিয়া পশুমাংস ভক্ষণাদি ত্যাগ করা উচিত মনে করি না।

পশুর সহিত আমাদের সম্বন্ধ।

পূর্ব্বেই বলিয়াছি, ঈশ্বর যেমন আমাদিগকে সৃজন করিয়াছেন, তেমন পশুগণকেও সৃজন করিয়াছেন। একমাত্র পরমপিতা পরমেশ্বরই সকলের স্রষ্টা ও পিতা। তাঁহার এই সৃষ্টি কত সুন্দর। তিনি সকল জীবের উপাস্য ও মুক্তিদাতা ভগবান। সকল জীবই সেই পরম দয়াময় ভগবানকে লাভ করিবার জন্য নিয়ত তাঁহাকেই ডাকিতেছে। তিনি প্রেমময় এবং পবিত্র। আমরা যাবত জীবমণ্ডলী তাঁহা হইতেই সৃষ্ট হইয়া তাঁহারই মহিমা স্মরণ করা উচিত এবং পরস্পর হিংসা দ্বেষ রহিত হইয়া ভগবানের মহিমা কীর্ত্তন করাই কর্ত্তব্য।

যখন আমরা সমগ্র জীবমণ্ডলীর সহিত সৌহৃদ্যস্থাপন করিয়া, একই প্রীতি বন্ধনে আবদ্ধ হইয়া জগতকে সুখময় ও শান্তিময় করিতে পারি, তখন কেন আমরা যাহার সহিত আমাদের এত ধর্ম্ম সম্বন্ধ রহিয়াছে সেই ঈশ্বর সৃষ্ট জীবগুলিকে হনন করিয়া নিজেদের পাপলিপ্সার চরিতার্থ করি। এ পাপ কেন করি? এইরূপ কলুষস্পর্শে কি আমাদের নিজেদের অনিষ্ট করি না?

তিনি যে চক্ষে মানবকে দর্শন করেন সেই চক্ষে পশু পক্ষীগণকেও দর্শন করেন, তাঁহার বিধানে সকলেই সমান স্নেহের পাত্র।

পরম দয়াময় ভগবান নানা জীব পরিপূর্ণ এই সৃষ্টিকে আনন্দময় স্বর্গ কল্পনা করিয়াই সৃজন করিয়াছেন এবং এই চেতন জীবের জন্য নানা প্রকার ঔষধী ও ফল মূল আদিও সৃজন করিয়াছেন। পিপাসা শান্তির জন্য জলও সৃষ্টি করিয়াছেন তবুও আমরা এত ঔষধী ফল মূল ও সুমিষ্ট জলাদি প্রাপ্ত হওয়া সত্বেও কেন যে আমাদের মত রক্ত মাংসময় পশুদের ভোজনের জন্য এত লালায়িত হই তাহা বুঝি না। পূর্ব্বেই বলিয়াছি, পশু মাংসে ও আমাদের মানব দেহের মাংসে কোনও পার্থক্য নাই তবুও আমরা ঐ রক্ত মাংসময় দেহই

ভোজন করিবার জন্য বড়ই ব্যস্ত হইয়া উঠি। হায়! হায়! পশুগণ অজ্ঞানী, আত্মরক্ষায় তত সম্পূর্ণ অপারগ। এবং হিংস্র মানবকুলের হস্ত হইতে উদ্ধার পাইবার জন্য উপায়হীন। ঐ অজ্ঞানী পশুগুলিকে হত্যা করিতে আমরা কতই না কৌশলজাল বিস্তার করি। আমরা বড়ই চতুর ও কৌশলী এবং হিংস্র। আমরা আমাদিগের হইতে দুর্ব্বল জন্তুদিগকে ধরিয়া ভোজন করি। কি পরিতাপ! কি ঘৃণা! এই রক্তমাংসময় দেহ ভোজন করিতে আমরা কিছুমাত্র ঘৃণা করি না।—কি লজ্জা!!

আয়ুর আবশ্যক।

আমরা মানুষ দীর্ঘ জীবন ও সুস্থ দেহ প্রার্থনা করি।—আমাদের সকল কর্ম্ম ও ধর্ম্মের মূলেই প্রার্থনা ও চেষ্টা যেন আমরা নিরাময় দেহ লইয়া অনেক দিন শান্তিতে জগতে বাস করিতে পারি। ধর্ম্ম যদি মান্য করি তাহা হইলে পশু প্রভৃতিকে বধ করা আমরা কিছুতেই সঙ্গত বলিয়া মনে করিতে পারি না। এবং ইহাও স্বীকার করিব যে পশু বলি পাপ। তার পর যদি দীর্ঘ জীবন চাহি, শান্তিময় জীবন চাহি তাহা হইলেও অপর জীবের প্রতি আমাদের দয়ালু হওয়া উচিৎ। অপরের জীবন নষ্ট করিয়া যাহারা নিজের জীবন বাড়াইতে চাহে, তাহারা জানে না যে তাহাদের নিজের জীবনই ক্ষয় করিতেছে। আয়ু মানুষের চির বাসনার জিনিষ। নিরোগ থাকিবার জন্য মানুষ প্রতি নিয়ত কত চেষ্টা করিতেছে। কিন্তু পূর্ব্বেকার আমাদের আদিপুরুষগণের মতন আমরা কেন তত নিরাময় দেহ লইয়া দীর্ঘ জীবন বাঁচিতে পারি না? তাহার একমাত্র কারণ, আমরা আহারে বিহারে নিতান্ত যথেচ্ছাচারী হইয়া পড়িয়াছি এবং পশুবধাদি কার্য্য দ্বারা আয়ুক্ষয় করিতেছি।

মাংসভক্ষণে শরীরে বহু রোগ আসে এবং মাংস ভক্ষণ জনিত রোগে আয়ুক্ষয় হয়। আমাদের উচিত সমগ্র জীবকে ভালবাসা। পশু হননাদি পরিত্যাগ করা এবং যাহাতে পবিত্র হৃদয়লাভ করিয়া ঈশ্বরের প্রেম পাইতে পারি, তাহা করা। যদি নিরাময় দেহ চাহি ও ভগবৎকৃপা লাভ করিতে ইচ্ছা করি, তাহা হইলেও পশু বধ ত্যাগ করা আমাদের উচিৎ।

পশুবধে প্রায়শ্চিত্ত।

শ্রীপার্ব্বতী ভগবান মহেশ্বরকে বলিতেছেন —

মদর্থে শিবকুর্ব্বন্তি তামসা জীবঘাতনং।
আকল্প কোটী-নিরযে তেষাং বাসো-ন সংশয়ঃ ॥৫
* * * * * * *
যো মোহাদ্বানসে দেহি-হত্যাং কুর্য্যাৎ সদাশিব।
একবিংশতি বৃত্বশ্চ তদ্দেবানিষু জায়তে ॥৮
যজ্ঞে যজ্ঞে পশূন্ হত্বা কুর্য্যাৎ শোণিতকর্দ্দমং।
স পচেন্নরকে তাবদ্ যাবল্লোমানি তস্যবৈ ॥৮

পদ্মপুরাণ উত্তরাখণ্ড—১ ৪।৫ অধ্যায়।

মহেশ্বর পার্ব্বতীকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন—'শিবে ওই মঙ্গলময়ী দুর্গে, সকল জীবই ত বিষ্ণুময় ও তোমার ভক্ত তথাচ মানবেরা কামনা করিয়া তোমার উদ্দেশে জীবহত্যা করে শুনিয়াছি—এ কিরূপ?' পার্ব্বতী তদুত্তরে বলিয়াছেন — হে মঙ্গলময়! যে সকল মানব তমবশে আমার উদ্দেশে জীবঘাত করিয়া থাকে, তাহারা আকল্প কোটি নরকে বাস করে, তদ্বিষয়ে সংশয় নাই। হে সদাশিব! মোহবশত যে মানব মনে মনও দেহবিশিষ্ট পশুর হত্যা কল্পনা করে, একবিংশতিবার তাহাকে সেই সেই পশুযোনিতে জন্মগ্রহণ করিতে হয়। নানা যজ্ঞে পশুহত্যা করিয়া [illegible] ব্যক্তি শোণিত কর্দ্দম করে, পশুর লোম সংখ্যা যত তত বৎসর সে নরকে পড়িয়া পচিয়া থাকে।

হিন্দুধর্ম্মের যে সকল লক্ষণ নির্দ্দেশ আছে তাহাতে স্পষ্টই রহিয়াছে অহিংসা ও দয়া দশবিধ ধর্ম্মের অন্তর্গত। একমাত্র অহিংসা দ্বারাই ত্রিলোক জয় করা যায়। তিনি সর্ব্বজীব হইতেই শ্রদ্ধা ও অভয় পাইয়া থাকেন, যাহার হৃদয়ে বিন্দুমাত্রও হিংসা নাই।

আমাদের দেশের ঋষি তপস্বীগণ আজ যাহাদের নামে আমরা গৌরবান্বিত তাঁহারা সকলেই ফলমূলাহারী অহিংসক তাপস ছিলেন। যে শ্রীরামচন্দ্র, লক্ষ্মণ,

সাধারণ বিবেচনা।

কোন ব্যক্তি যদি তোমায় আঘাত করে তোমায় বন্ধন করিয়া রাখে, তাহাতে তোমার কি কষ্ট হয়, তাহা তুমি জান তবে সেইরূপ অন্যান্য প্রাণীকেও কেহ বন্ধন করিয়া রাখিলে কেহ বা আঘাত করিলে তাহাদিগের কেমন কষ্ট হয়। তুমি যাহার দ্বারা কষ্ট পাও, অন্যেও যখন তাহাতে কষ্ট পায় তখন তোমার তাহা করা উচিত কি?

বঙ্গ রমণীগণ! তোমাদিগের নিকটও আমার নিবেদন তোমরা বিবেচনা করিয়া দেখ তোমরা দশ মাস দশ দিন সন্তান গর্ভে ধারণ করিয়া কত কষ্ট পাও সেই সন্তান ভূমিষ্ঠ হইলে তাহার দর্শনে ও গাত্রস্পর্শে কত আনন্দিতা হও। মনে রাখিও তোমাদের মতন অপর জীবও সেইরূপ দশ মাস দশ দিন সন্তান গর্ভে ধারণ করে এবং ভূমিষ্ঠ হইলে তোমাদের মতন যত্ন করে, তোমাদের মতন সুখী হয় অতএব তোমাদের উচিত কি, তাহাদিগকে বলি দিতে দেওয়া? তোমরা স্বয়ং সন্তানের স্নেহ কেমন জান না। তোমাদিগকেই বলিতেছি, তোমরা সন্তানের মা হইয়া অপরের সন্তানকে কি করিয়া হত্যা করাও। তুমি যেমন তোমার সন্তানটির কল্যাণ কামনা কর তেমনি অপরেও ত তাহার সন্তানটির কল্যাণ কামনা করে। অতএব রমণীগণ নিজের সন্তানের সুখের পানে চাহিয়া বুকে হাত দিয়া বল দেখি, অপরের সন্তানকে মারা উচিত কি? মৎস্যগুলিও জানিবে তাহারাই তাহারা আনন্দে কেমন ভাবে জলে বিচরণ করে, আর আমাদের উচিত কি তাহাদের প্রাণ হানি করা? হে জ্ঞানিগণ! আমাদের তোমার মতন ঐ সকল প্রাণীরও ত প্রাণ রহিয়াছে, অতএব নিজেরা বিচার করিয়া দেখ, তাহাদিগকে বধ করা আমাদের উচিত হয় না। তুমি যেমন তোমার সন্তানটিকে কাহারও নিকট বলি দিতে দিতে চাহ না নিশ্চয় জানিবে, জগন্মাতা জগদম্বাও তেমন তাঁহার নিকট, তাঁহার আপন সন্তান বলি নিতে পারেন না।

নিশ্চয় মনে রাখিও যদি আত্মার কল্যাণ চাও তাহা হইলে কখনও জীবের প্রাণ নাশ করিয়া আপন কল্যাণ লাভ করিতে পারিবে না। সর্বজীবে দয়ার দ্বারাই একমাত্র আত্মার কল্যাণ লাভ হইয়া থাকে।

পশুমাংস খাদ্য।

পশুমাংস ভোজন করিতে আমাদের ঘৃণা হয় না। আমরা একবার ভাবিয়াও দেখি না যে ঐ পশুদেহ ও আমাদের দেহে কোন পার্থক্য নাই। মানবদেহের যাবতীয় উপকরণেই পশুর দেহ নির্ম্মিত হইয়াছে। অথচ, আমরা সেই পশুদেহই ভক্ষণ করিতে চাহি। মানুষগুলি মরিয়াগেলে মড়া বলিয়া অপবিত্র বোধে তাহাকে আমরা স্পর্শ পর্য্যন্তও করি না। যেখানে মৃতদেহটী থাকে সেখানে গঙ্গাজল গোবরছড়া দিয়া থাকি, কিন্তু ছাগল, ভেড়া প্রভৃতির মৃতদেহটাকে চামড়া ছাড়াইয়া কেমন উপাদেয় বোধে আহার করি। মৃতদেহটাকে ভোজন করিতে আমাদের ঘৃণাও হয় না।

মানবও পশু। মানব দ্বিপদ পশু। ছাগল ভেড়া প্রভৃতি চতুষ্পদ এবং মৎস্যাদি পদবিহীন পশু। পশু আর কিছুই নহে জীবের নামভেদ মাত্র। কিন্তু মানুষ ও পশু পক্ষীর দেহ একই রকম। আমাদের উদরে যেমন পাকস্থলী আছে মূত্রকোষে মূত্র আছে মলাধারে মল আছে, আমাদের দেহ যেমন বায়ু পিত্ত কফাদিতে চলিত পশুদেহেও ঠিক অবিকল তাহাই রহিয়াছে। অথচ যে মানবদেহকে অপবিত্র বলিয়া ত্যাগ করি, সেই মানবদেহের মতন অপর জীবের দেহকে পরম পবিত্র বলিয়া ভক্ষণ করি। কি পিশাচ বুদ্ধি। কি পরিতাপের বিষয়।।

এই বিষয় ব্যাখ্যা করিলে আমরা অনেক ব্যাখ্যা করিতে পারি। এমন অনেক কদাচার জীব আছেন যাহারা মনে করেন বলি বুঝি পূজার উপকরণ। চৈতন্য শক্তিসম্পন্ন জীবকে চৈতন্যের আধার ভগবানের অংশ বা স্বরূপই মনে করা উচিত। কিন্তু চৈতন্যশালী জীবকে নিধন করিয়া আমরা জগদীশ্বরের কৃপা ভিক্ষা করি। কখনও তিনি কাহাকেও কৃপাদান করিতে পারেন কি?

আমরা মাংসাদি কে ধর্ম্ম ও সমাজগত হিসাবে বিভিন্ন মনে করি পূর্ব্বেই বলিয়াছি, সেই মাংসভোজী পাশ্চাত্য জাতির মধ্যে এখন লক্ষ লক্ষ লোক জীবহিংসা যে নিতান্ত অধর্ম্মকর এবং জীবমাংস ভোজন যে নিতান্ত দূষ্য তাহা স্বীকার করেন। সেইজন্য জীবের প্রতি মানুষের অত্যাচার নিবারণের জন্য বিলাতে নিউমেটেরিয়ান সোসাইটী, জীবে দয়া সভা, স্থাপিত হইয়াছে এবং আমাদিগের দেশেও পশুক্লেশ নিবারণী সভা স্থাপিত হইয়াছে। সেইজন্য আইন

প্রবৃত্ত হইয়াছে। আমরা এইস্থানে ইয়োরোপের জাতি সকলের মধ্যে এই বিষয় যতটা আন্দোলন চলিতেছে তাহা ব্যক্ত করিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ করিব।

দি গোল্ডেন এজ্ সম্পাদক মি বিয়ার্ড এ সম্বন্ধে অনেকগুলি গ্রন্থ প্রচার করিয়াছেন। মি হেনরী সল্ট আনিমাল রাইট্‌স্ নামক গ্রন্থে প্রথমেই প্রশ্ন করেন যে পশুদিগের কোন ক্ষমতা বা দাবী আছে কি? তিনি বলেন— মানুষের যখন সর্ব্ববিষয়ে দাবী গ্রাহ্য হইতে পারে তখন পশুদিগেরও সেই দাবী করিবার ক্ষমতা আছে, কারণ সকলেই এক ঈশ্বর সৃষ্ট।

আমরা মানুষের দাবী দাওয়া লইয়াই সর্ব্বদা ব্যস্ত কিন্তু পশুপক্ষিদিগকে অনবরত পীড়ন করিয়া একটা ব্যতিব্যস্ত করিয়া তুলিয়াছি যে তাহাতে সমগ্র পশুকুল আকুল হইয়া ভগবানের নিকট দয়া ভিক্ষা করিতেছে না? তাহা কে বলিল। জীবের হিসাবে পশুর উপর অত্যাচার করিবার আমাদের কোন ক্ষমতা নাই।

প্রাচ্য এবং পাশ্চাত্য সর্ব্বদেশীয় পণ্ডিতগণই একবাক্যে পশুহিংসা নিবারণ করিয়া গিয়াছেন। বৌদ্ধ সাধুগণ এবং পিথাগোরিয়ান পুরোহিতগণ পুনঃ পুনঃ নিষেধ করিয়া গিয়াছেন যে "not to kill or injure any innocent animal" জীবের প্রতি স্নেহবান্ রোমান্ দার্শনিকগণ মধ্যে সেনেকা, প্লুটার্ক এবং পরফিরি প্রসিদ্ধ। ইয়োরোপে ইহারা মনুষ্যকে জীবের প্রতি সদ্ব্যবহার করিতে পুনঃ পুনঃ উপদেশ দিয়া গিয়াছেন। ঐ সকল মহাত্মাগণ কখনও জীবহিংসা করিতেন না।

তৎপরে চতুর্থ শতাব্দী হইতে ১৮শ শতাব্দী পর্য্যন্ত মানবেতর জীবগুলির প্রতি দয়া দাক্ষিণ্য দেখাইতে মানবগণ বিশেষ মনোযোগী হয় নাই। গত অষ্টাদশ শতাব্দীতে মানবের জ্ঞান ও জ্ঞানের পোষকতা বাড়িয়া উঠে। এবং মানবেতর জীবের প্রতিও যে মানুষের কর্ত্তব্য আছে তাহা ভল্টেয়ার এবং রুশো ব্যক্ত করেন। ১৭৮০ খৃ অব্দের বিশ্বব্যাপী বিপ্লবের সময় প্রথম মানুষের সাথে জীবের প্রতি দয়ার বিষয় কি সম্বন্ধে প্রকাশ হয়। জেরেমি বেন্থাম্ জীবদয়ার জন্য বিশেষ পরিশ্রম করেন। ১৮১১ খৃ অব্দে লর্ড এরস্কিন বিলাতের লর্ড সভায় পশুদিগের প্রতি দয়া দেখাইবার কথা উল্লেখ করিয়া এক সুদীর্ঘ

বক্তৃতা করেন। কিন্তু ইংলণ্ডের জনসাধারণ সকলেই টিট্কারী দিয়া এরস্কিনকে অপমানিত করে। ইহার ঠিক ১১ বৎসর পরে, রিচার্ড মার্টিন পশুদিগের প্রতি দয়া প্রকাশ করিবার জন্য বক্তৃতা দিয়া জনসাধারণকে মুগ্ধ করেন। ১৮২২ সালে ইংলণ্ডে প্রথম "মার্টিন এক্ট" নামক পশুর প্রতি নিষ্ঠুরতা নিবারক এক বিল পাশ হয়। রিচার্ড মার্টিন ঐ দিন হইতেই ইংলণ্ডে চিরস্মরণীয় হইয়া পড়েন। ১৭৯৬ সনেও জন লরেন্স পশুর প্রতি মানুষের কর্তব্য নামক একখানি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। ১৮৬৩ খৃ অব্দ লন্ডনের মানেও দি রাইট্স্ অব্ ম্যান এণ্ড, দি রেশ্ম্ অব্ ক্রুট্স্ নামক একখানি গ্রন্থ প্রকাশিত হয়।

এইরূপ উল্লেখ করিতে ইচ্ছা হইলে আমরা বহু গ্রন্থের নাম উল্লেখ করিতে পারি এবং বহু দয়ালু ব্যক্তির নামের তালিকাও প্রকাশ করিয়া লোককে বিস্মিত করিতে পারি।

ইহা সত্য যে পশুগণ জ্ঞানে বিজ্ঞানে উন্নত মানুষের নিকট অধিক দয়া ও অধিক কৃপা প্রার্থনা করিতে পারে।

ইংলণ্ডে প্রথমে ১৮২২ খৃ অব্দে পশু ক্লেশ নিবারণী আইন পাশ হয়, তাহা পূর্ব্বেই বলিয়াছি। পশুগুলি বনে জঙ্গলে বাস করে। মানুষের সহিত তাহাদিগের কোন বিবাদ বিসম্বাদ নাই। মানুষের কোন কার্য্যে তাহারা ব্যাঘাত উপস্থিত করে না। মানুষের স্থায় পশুগণ, মানুষের সম্পত্তি সম্পদ স্ত্রীপুত্র হরণ করিয়া মানুষকে আলাতন করে না। তবে মানুষ কি কারণে সেই নিরীহ পশুকে ত্যক্ত করিয়া তাহাদিগের বিনাশ সাধন করে? মানুষই স্বত প্রবৃত্ত হইয়া পশুগুলির প্রতি প্রথম হিংসা আরম্ভ করে এবং পশু মাংস ভক্ষণ করিয়া নিজেদের নীচ বৃত্তির পরিচয় দান করে। আত্মস্বার্থে পশুগুলিকও পরিশেষে হিংসার বশবর্ত্তী হইতে হয়।

সাধারণ মানুষ ও পশুতে অনেক প্রভেদ কিন্তু মানুষগুলি আপনা হইতে নিকৃষ্ট ও জ্ঞানহীন জানিয়াও পশুদিগকে ক্লেশ দিতে কিছুমাত্র ক্লেশ বোধ করে না। পশুর রক্ত মাংস দেহ ঠিক নারী ও পুরুষের রক্ত ও বীর্য্য হইতে উৎপন্ন মানবদেহের ন্যায় তাহা ভক্ষণ করিয়া মানুষগুলি ঘৃণা বোধ করেন না।

আমরা দেখিব পশুগুলি বস্তুত আমাদের স্নেহের পাত্র কি না এবং উহাদিগকে বধ করা আমাদের কর্ত্তব্য কি না।

প্রস্তুত হইয়াছে। আমরা এইস্থানে ইয়োরোপের জাতি সকলের মধ্যে এই বিষয় কতটা আন্দোলন চলিতেছে তাহা ব্যক্ত করিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ করিব।

দি গোলডেন এজ সম্পাদক মি বিয়ার্ড এ সম্বন্ধে অনেকগুলি গ্রন্থ প্রচার করিয়াছেন। মি হেন্‌রী সল্ট আপনার এ্যানিম্যাল রাইট্‌স্ নামক গ্রন্থে প্রথমেই প্রশ্ন করেন যে পশুদিগের কোন ক্ষমতা বা দাবী আছে কি? তিনি বলেন— মানুষের যখন সর্ববিষয়ে দাবী গ্রাহ্য হইতে পারে তখন পশুদিগেরও সেই দাবী করিবার ক্ষমতা আছে কারণ সকলেই এক ঈশ্বর সৃষ্ট।

আমরা মানুষের দাবী দাওয়া লইয়াই সর্ব্বদা ব্যস্ত কিন্তু পশুপক্ষিদিগকে অনবরত পীড়ন করিয়া চেষ্টা বাতিব্যস্ত করিয়া ভুলিয়াছি যে তাহাতে সমগ্র পশুকুল আকুল হইয়া যে ভগবানের নিকট দয়া ভিক্ষা করিতেছে না? তাহা কে বলিল। জীবের বিনাশ পশুর উপর অত্যাচার করিবার আমাদের কোন ক্ষমতা নাই।

প্রাচ্য এবং পাশ্চাত্য সকলদেশীয় পণ্ডিতগণই একবাক্যে পশুহিংসা নিবারণ করিয়া গিয়াছেন। বৌদ্ধ সাধুগণ এবং পিথাগোরিয়ান পুরোহিতগণ পুনঃ পুনঃ নিষেধ করিয়া গিয়াছেন যে 'not to kill or injure any innocent animal' জীবের প্রতি স্নেহবান্ রোমান্ দার্শনিকগণ তন্মধ্যে সেনেকা, প্লুটার্ক এবং পরফিরি প্রসিদ্ধ। ইয়োরোপে ইহারা মনুষ্যকে জীবের প্রতি সদ্ব্যবহার করিতে পুনঃ পুনঃ উপদেশ দিয়া গিয়াছেন। ঐ সকল মহাত্মাগণ কখনও জীবহিংসা করিতেন না।

তৎপরে চতুর্থ শতাব্দী হইতে ষষ্ঠ শতাব্দী পর্য্যন্ত মানবেতর জীবগুলির প্রতি দয়া দাক্ষিণ্য দেখাইতে মানবগণ বিশেষ মনোযোগী হয় নাই। তৎ অষ্টাদশ শতাব্দীতে মানুষের অন্তরে জ্ঞানের প্রাবল্য বাড়িয়া উঠে। এবং মানবেতর জীবের প্রতিও যে মানুষের কর্ত্তব্য আছে তাহা ভলটেয়ার এবং রুশো ব্যক্ত করেন। ১৭৮৯ খৃঃ অব্দের বিশ্বব্যাপী বিপ্লবের সময় প্রথমে মানুষের প্রাণে জীবের প্রতি দয়ার বিষয় বিশেষভাবে জাগ্রত হয়। জেরেমি বেন্থাম স্বীয় দয়ার মত বিশেষ পরিস্ফুট করেন। ১৮১১ খৃঃ অব্দে লর্ড এরস্কিন বিলাতের লর্ড সভায় পশুদিগের প্রতি দয়া দেখাইবার কথা উল্লেখ করিয়া এক সুদীর্ঘ

বক্তৃতা করেন। কিন্তু ইংলণ্ডের জনসাধারণ সভাস্থলেই বিদ্রূপ করিয়া এরস্কিনকে অপমানিত করে। ইহার ঠিক ১১ বৎসর পরে, রিচার্ড মার্টিন পশুদিগের প্রতি দয়া প্রকাশ করিবার জন্য বক্তৃতা দিয়া জনসাধারণের বুঝ করেন। ১৮২২ সালে ইংলণ্ডে প্রথম 'মার্টিন এক্ট' নামক পশুর প্রতি নিষ্ঠুরতা নিবারক এক বিল পাশ হয়। রিচার্ড মার্টিন ঐ দিন হইতেই ইংলণ্ডে চিরস্মরণীয় হইয়া পড়েন। ১৭৯৬ সালেও জন্ লরেন্স পশুর প্রতি মানুষের কর্তব্য নামে একখানি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। ১৮৬৩ খৃ অব্দে লাবরস মাস্ক দি রাইট্‌স্ অব্ ম্যান এণ্ড দি রেমস্ অব্ ক্রটস্ নামে একখানি গ্রন্থ প্রকাশিত হয়।

এইরূপ উল্লেখ করিতে ইচ্ছা হইলে আমরা বহু গ্রন্থের নাম উল্লেখ করিতে পারি এবং বহু দয়ালু ব্যক্তির নামও তালিকায় প্রকাশ করিয়া লোকের চিত্ত [illegible] করিতে পারি।

ইহা সত্য যে পশুগণ জ্ঞান বিজ্ঞানে উন্নত মানবের নিকট অধিক [illegible] অধিক কৃপা প্রার্থনা করিতে পারে।

ইংলণ্ডে প্রথমে ১৮২২ খৃ অব্দে পশু ক্লেশ নিবারণী আইন পাশ হয়, তাহা পূর্বেই বলিয়াছি। পশুগুলি বনে জঙ্গলে বাস করে। মানবের সহিত তাহাদের কোন বিবাদ বিসম্বাদ নাই। মানুষের কোন স্বার্থে তাহারা বাধা [illegible] করে না। মানুষের ন্যায় পশুগণ, মানুষের সভায় সম্পদ [illegible] মানুষকে আক্রমণ করে না। তবে মানুষ কি কারণে সেই নিরীহ পশুগণকে করিয়া তাহাদিগের বিনাশ সাধন করে? মানবই সর্ব প্রথম [illegible] প্রতি প্রথম হিংসা আরম্ভ করে এবং পশু [illegible] বৃত্তির পরিচয় দান করে। আত্মরক্ষার্থে পশুদিগকে বশবর্তী হইতে [illegible]।

সাধারণ মানব ও পশুতে অনেক [illegible] নিকৃষ্ট ও জ্ঞানহীন জানিয়াও পশুদিগকে ক্লেশ করে না। পশুর রক্ত মাংস দেহ ঠিক [illegible] উৎপন্ন মানবদেহের ন্যায়, তাহা স্মরণ করিলে [illegible]

আমরা দেখিব পশুগুলি বস্তুত [illegible] ইহাদিগকে বধ করা আমাদের কর্তব্য কি

আমরা একমাত্র খাদ্যের জন্যই পশু বধ করি। অন্য কোন কারণে পশু হিংসা করি না। মাংস ভক্ষণ মানুষ আপনার আহারীর মধ্যে প্রধান উপাদেয় বলিয়া ধারণা করিয়া লইয়াছে কিন্তু ঐ মাংস আমার তোমার দেহ যে উপকরণে নির্ম্মিত হইয়াছে, সেই উপকরণেই যে নির্ম্মিত হইয়াছে পূর্ব্বেও তাহা বলিয়াছি এবং পুনর্বারও সেই কথা বলিতে বাধ্য হইলাম।

এখন কথা হইতেছে এই যে যদি মাংস ভক্ষণের জন্যই আমরা পশু বধ করি তাহা হইলে সেই মাংস ভক্ষণ আমাদের উচিত কি না। কারণ মাংস বিচার দ্বারা বিচার করিয়া দেখ কি হইতে উৎপন্ন হইয়াছে এবং ঐ মাংস মানুষের পক্ষে উপকারী কি না। অনেক লোক আছে, তাহারা নানা শাস্ত্রের দোহাই দিয়া মাংস ভক্ষণ অযৌক্তিক নহে তাহা প্রমাণ করিতে চাহে। আয়ুর্ব্বেদ গ্রন্থেও মাংসের পথ্য দেওয়ার কথা উক্ত আছে। কিন্তু বিজ্ঞানের দ্বারা প্রমাণ হইয়াছে যে মাংস সজীবদেহের পুষ্টির পক্ষে অনুকূল নহে বরং অপকার জনক।—সকল দেশের সকল মনিষিরা ও সাধুরা প্রতি যুগেই আমিষ নিষেধ করিয়া গিয়াছেন। ইহাদের বর্ণনায় বাইবেলেও আমরা এই বিষয় অনেক প্রমাণ পাইয়াছি।

Mathew The Apostle lived upon seeds, and hard shelled fruits and other vegetables, without touching flesh খ্রীষ্টান কমিউনিটীর প্রধান ব্যক্তি যেমন্ সবকেও এক্লিসিয়েষ্টিক্ ইতিহাসে হেজেসিপাস লিখিয়াছেন 'Jame never ate animal food অগষ্টাইনও তাহার গ্রন্থে লিখিয়াছেন যে 'James the brother of the Lord, lived upon seeds and vegetables never tasting flesh or wine খিষ্টের ভ্রাতা যেমন্ শস্য ও শাকসব্জী আহার করিতেন। তিনি কখনও মাংস বা মদ ব্যবহার করেন নাই।

বাইবেল সব নানা স্থানের বিবরণীতে মাংস ভক্ষণ সম্বন্ধে অনেক নিষেধসূচক সংবাদ পাওয়া যায়। গারটুাড ম্যাকঞ্চার তাহার গ্রন্থে এই বিষয়ের বহু দৃষ্টান্ত দেখাইয়াছেন। খিষ্টের প্রধান প্রধান শিষ্যের মধ্যে টারটুলিয়ান বেসিল, ক্রেমেন্ট অব্ আলেকজান্দ্রিয়া জন্ ক্রাইসোষ্টম জেরোমি অরিজেন মারকিয়ন, এবং কানিড্রেটাস প্রভৃতি চিন্তাশীলগণ কখনও মৎস্য মাংস ভক্ষণ করেন নাই।

(যাথু লিখিত গ্রন্থ হোমিলির ৭৯ ম্যা। ২২, ১ হইতে ১৪) আছে —
No streams of blood are among them, no butchering and cutting up of flesh, no dainty cookery, no heaviness of head Nor are there horrible smells of flesh meats among them, or disagreeable fumes from the kitchen No tumult or disturbance and wearisome, clamouring but bread and water If however they may desire to feast more sumptuously the sumptuousness consists in fruits and their pleasure in these is greater than at Royal tables।

খ্রীষ্ট ভক্তদিগের ভোজ সভার এই সুন্দর চিত্রটী কত সুন্দর।

আমাদের দেশেও বৈষ্ণব কি জৈন, বা বৌদ্ধ সমাজের লোকগণ যখন ভোজ সভায় একত্রিত হয় তখন দেখিতে পাইবেন —

সে স্থানে রক্ত স্রোত প্রবাহিত হয় নাই, মৎস্য মাংস বা জীবের হাড় মাসে সে স্থানে বীভৎস আকার ধারণ করে নাই। মাংস সিদ্ধের দুর্গন্ধে সে স্থানের বায়ু দূষিত হয় নাই, মৃত জন্তুর হাড় কঙ্কালে সে স্থানে পাহাড় জমে নাই। কোন ঝগড়া নাই, বিবাদ নাই, আহারের জন্য কাহারও শোর উপস্থিত হয় নাই। কেবল রুটী, কেবল অন্ন, কেবল তরি তরকারী ও জল। আরও দেখিতে পাইবেন এই সকল ভোজসভায় মাংসলোলুপ শকুনি, গৃধিনী, শিবা কুকুর আগমন করে নাই। এখানে সুপক্ক সুস্বাদু ফল ভারে ভোগ্য থালা গুলি পরিপূর্ণ রহিয়াছে।

আমাদের প্রধান ধর্মগ্রন্থ বেদের প্রথম শ্লোকেই রহিয়াছে অহিংসা পরম ধর্ম। যদি আমরা পশু বধাদিদ্বারা সেই হিংসা কার্য্যই করিলাম তাহা হইলে কি প্রকারে যে ধর্ম লাভ করিব তাহা জানি না।

কি শাস্ত্র যুক্তি, কি সামাজিক আচার, অর্থাৎ আপন আপন স্বার্থবদ্ধ ভাব ভিন্ন কিছুরই দ্বারা উহা প্রতিপন্ন হয় না যে মাংস আহার আমাদের উচিৎ। তবে যাহারা শাস্ত্রের বা ধর্ম্মের দোহাই দিয়া মৎস্য মাংস আহারের যুক্তি দেখান তাহাদিগকে আমরা বেশ কথা না বলিয়া একমাত্র জিজ্ঞাসা করিতে

আমরা একমাত্র স্বাদের জন্যই পশু বধ করি। অন্য কোন কারণে পশুবধ করি না। মাংস ভক্ষণ মানুষ আপনার শারীরিক স্বাস্থ্য প্রধান উপায় বলিয়া ধারণা করিয়া লইয়াছে কিন্তু ঐ মাংস আমার তোমার দেহ যে উপকরণে নির্ম্মিত হইয়াছে সেই উপকরণেই যে নির্ম্মিত হইয়াছে পূর্ব্বেও তাহা বলিয়াছি এবং পুনরায়ও সেই কথা বলিতে বাধ্য রহিলাম।

এখন কথা হইতেছে এই যে যদি মাংস ভক্ষণের জন্যই আমরা পশু বধ করি তাহা হইলে সেই মাংস ভক্ষণ আমাদের উচিত কি না। কারণ মাংস বিচার দ্বারা বিচার করিয়া দেখ কি হইতে উৎপন্ন হইয়াছে এবং ঐ মাংস মানুষের পক্ষে উপকারী কি না। অনেক লোক আছে, তাহারা নানা শাস্ত্রের দোহাই দিয়া মাংস ভক্ষণ অস্বাভাবিক নহে তাহা প্রমাণ করিতে চাহে। আয়ুর্ব্বেদ গ্রন্থেও মাংসের পথ্য দেওয়ার কথা উক্ত আছে। কিন্তু বিজ্ঞানের দ্বারা প্রমাণ হইয়াছে যে মাংস মনুষ্যদেহের পুষ্টির পক্ষে অনুকূল নহে বরং অপকার জনক।—সকল দেশের সকল মনিষিগণ ও সাধুগণ প্রতি যুগেই জীবহিংসা নিষেধ করিয়া গিয়াছেন। খ্রীষ্টানদের ধর্ম্মশাস্ত্র বাইবেলেও আমরা এই বিষয় অনেক প্রমাণ পাইয়াছি।

Mathew The Apostle lived upon seeds and hard shelled fruits and other vegetables without touching flesh খ্রীষ্টান কমিউনিটীর প্রধান ব্যক্তি জেমস্ সম্বন্ধে এক্লিসিয়েষ্টিক্ ইতিহাসে হেজেসিপাস লিখিয়াছেন James never ate animal food অগষ্টাইনও তাহার গ্রন্থে লিখিয়াছেন যে James the brother of the Lord lived upon seeds and vegetables never tasting flesh or wine" যিশু খ্রীষ্টের ভ্রাতা জেমস্ শস্য ও শাকসব্জী আহার করিতেন। তিনি কখনও মাংস বা মদ ব্যবহার করেন নাই।

বাইবেল এর নানা স্থানের বিবরণীতে মাংস ভক্ষণ সম্বন্ধে অনেক নিন্দাসূচক সংবাদ পাওয়া যায়। শারট্রান ম্যাকফার্ট তাহার গ্রন্থে এই বিষয়ের বহু দৃষ্টান্ত দেখাইয়াছেন। যিশুখ্রীষ্টের প্রধান প্রধান শিষ্যের মধ্যে টারটুলিয়ান, বেসিল, ক্লেমেন্স আলেকজান্দ্রিয়াস জন ক্রাইসোষ্টম জেরোমি, অরিজেন, মারকিয়ন এবং কান্সিট্রেটাস প্রভৃতি চিন্তাশীলগণ কখনও মৎস্য মাংস ভক্ষণ করেন নাই।

[illegible] (... ২২, ১ হইতে ১৪) আছে —

"No streams of blood are among them, no butchering and cutting up of flesh, no dainty cookery; no heaviness of head. Nor are there horrible smells of flesh meats among them, or disagreeable fumes from the kitchen. No tumult of disturbance and wearisome, clamouring but bread and water. If however, they may desire to feast more sumptuously the sumptuousness consists in fruits and their pleasure in these is greater than at Royal tables."

ঐ ভক্তদিগের ভোজ সভায় এই সুন্দর চিত্রটী কত সুন্দর।

আমাদের দেশেও বৈষ্ণব কি জৈন, বা বৌদ্ধ সমাজের লোকগণ যখন ভোজ সভায় একত্রিত হন তখন দেখিতে পাইবেন —

যে স্থানে রক্ত স্রোত প্রবাহিত হয় নাই, মৎস্য মাংস বা জীবের হাড় মাসে সে স্থানে বীভৎস আকার ধারণ করে নাই। মাংস সিদ্ধের দুর্গন্ধে সে স্থানের দূষিত হয় নাই, মৃত জন্তুর হাড় কঙ্কালে সে স্থানে পাহাড় জমে নাই। কোন ঝগড়া নাই, বিবাদ নাই, আহারের জন্য কাহারও শোক উপস্থিত হয় নাই। কেবল রুটী, কেবল অন্ন, কেবল তরি তরকারী ও জল। আরও দেখিতে পাইবেন এই সকল ভোজসভায় মাংসলোলুপ শকুনি, গৃধিনী, শিবা উৎপাত করে নাই। এখানে বৃক্ষপক্ব সুস্বাদু ফল ভাবে ভোগ্য থালা পরিপূর্ণ রহিয়াছে।

জৈনদের প্রধান ধর্মগ্রন্থ বেদের প্রথম শ্লোকেই রহিয়াছে অহিংসা পরম ধর্ম। যদি আমরা পশু বধাদিদ্বারা সেই হিংসা কার্য্যই করিলাম, তাহা হইলে কি প্রকারে যে পুণ্য লাভ করিব তাহা জানি না।

কি শাস্ত্র যুক্তি, কি সামাজিক আচার, অর্থাৎ আপন আপন স্বার্থবদ্ধ ত্যাগ করিয়াই যারা উহা প্রতিপন্ন হয় না যে মাংস আহার আমাদের উচিৎ। [illegible] শাস্ত্রের বা ধর্ম্মের দোহাই দিয়া মৎস্য মাংস আহারের যুক্তি [illegible] পক্ষপাতিদের আমরা বেশী কথা না বলিয়া একমাত্র জিজ্ঞাসা করিতে

চাহে যে, যে দয়াময় তোমাকে ও আমাকে পশুকে ও মানবকে
করিয়াছেন, তাহার হিসাবে আমি ও তুমি, পশু ও মানবে তিনি
কোন পার্থক্য করিয়াছেন কি? তিনি পরম দয়ালু তিনি সর্বজীবে সমভাবে
দয়া করেন। অতএব আমরা যে কোন্ ধর্ম লাভ করিবার জন্য পশু
করি তাহা জানি না।

এখন মাংস ভক্ষণ সম্বন্ধে দুই একটী কথা বলিয়া আমাদের বক্তব্য শে
করিব।

পূর্ব্বেই বলিয়াছি, ধর্ম্মের দিক দিয়া দেখিতে গেলে, দেখা যায়, কো
ধর্ম্মতেই পশুবধ যুক্তিসিদ্ধ বলিয়া প্রচার করেন নাই।

বিজ্ঞানের হিসাবে দেখিতে গেলে দেখা যায় পশুমাংস ভক্ষণ দ্বারা আম
উপকৃত না হইয়া বরং অধিকতর অপকৃত হইয়া থাকি?

যাহারা দীর্ঘজীবন লাভ করিতে চাহেন এবং সবল ও নিরোগ হইতে ইচ্ছা
করেন তাহারা ইহা বেশ মনে রাখিবেন যে ক্ষিতি অপ্ তেজ মরুৎ ব্যো
হইতে জীবদেহ সৃষ্টি হইয়াছে। ঐ সকল জীবদেহে বায়ু পিত্ত কফ সমবা
পরিপুষ্ট এবং বিনষ্ট হয়। পশুমাংস ভক্ষণ দ্বারা ঐ সকল বায়ু পিত্ত কফা
আশ্রিত জীবদেহই আমরা ভক্ষণ করিয়া তাহার দোষগুণ শরীরে গ্রহণ করি
বায়ু পিত্তের বিকৃতি না হইলে জীব কখনও মরে না এবং মৃতদেহের মাংসাদি
অতিশয় দুর্গন্ধ ও বিষাদযুক্ত হয় অতএব ঐ বায়ু পিত্ত কফাদি দোষদুষ্ট মা
ভক্ষণ করিতে কি আমাদের ঘৃণা হওয়া উচিত নহে?

মাংস ও মৎস্যাদি ভক্ষণ দ্বারাই মানুষের ভেতরে রোগ অত্যন্ত বাড়ি
গিয়াছে। প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য সকল মনীষীগণেরই এই মত। আমরা মানুষে
খাদ্য নামক গ্রন্থে তাহা ব্যাখ্যা করিব।

পাশ্চাত্য ডাক্তারগণের মধ্যে সিডনী সাহেব বলেন একমাত্র মৎস্য মা
ভক্ষণের জন্যই মানুষের মধ্যে অনেক কঠিন রোগ উৎপন্ন হয়। ঐ বিখ্য
মৎস্য মাংস ভক্ষণের অপকারিতা প্রমাণ করিতে প্রয়াসী হইয়া অনেকগুলি
নিরামিষাশী ব্যক্তির দৃষ্টান্ত দেখান। তিনি আপনার কাগজে একাশী বৎসরে

প্রকাশ করেন। ঐ পত্র ৮২ বাষট্টি বৎসর কখনও মাংস ভক্ষণ করেন নাই। এবং একদিনের জন্য কখনও কোন রোগে ভোগেন নাই। তিনি বরাবর সমান কষ্ঠ ও সবল ছিলেন। বিশ বর্ষীয় যুবকের ন্যায় ইন্দ্রিয়গুলি সতেজ ছিল। অপর একজন নিরামিষাশীর বিবরণ প্রকাশ করেন এবং কাগজে তাহার ছবিও প্রকাশ করেন। তিনি একজন ব্যায়ামকুশল পণ্ডিত। নাম কাপ্তেন গডভাড ই, ডায়মণ্ড। ১১২ বৎসর বয়স ১৮৯১। এই অতিবৃদ্ধ যোদ্ধাবীর সেই সময়ে সানফ্রানসিস্কো নগরে ছেলেদের ব্যায়াম শিক্ষা দিতেন। তিনি জন্মাবধি ৮৩ বৎসর কোন প্রকার মাংস ভক্ষণ করেন নাই। যখন তাঁহার ১০০ একশত বৎসর বয়ঃক্রম তখন তিনি প্রতিদিন ২০ বিশ মাইল পথ হাঁটিতে পারিতেন। এইরূপ বহু দৃষ্টান্ত দেওয়া যাইতে পারে।

মাংস ভোজন দ্বারা কুষ্ঠব্যাধি ও অপরাপর নানা প্রকার কঠিন ব্যাধি উৎপন্ন হয়। মাংস ও মৎস্য ভক্ষণের জন্যই অন্ত্রে কৃমি প্রভৃতি রোগও দেখা যায়।

পিথাগোরস, প্লেটো, অরিষ্টটোল, সক্রেটিস, হাইপেশিয়া আদাম ক্লিচার্ক্, ডাইওজিনিস, মুহম্মদ, সেনেকা বুদ্ধ চৈতন্য রাম, শ্রীকৃষ্ণ প্রভৃতি এবং আধুনিক খ্রীষ্টিয়ান্ সাধু জেমস্ ম্যাথু, গ্রেট পিটার, মিলটন, নিউটন বেঞ্জামিন ফ্রাঙ্কলিন, সেলসন, ওয়েসলি টন, শেলি পার্সি ওয়েস্লেসলি, নিউম্যান, বার্নার্ড শ', এডিসন জেনেরেল বুথ ইহারা সকলেই নিরামিষাশী। শঙ্করাচার্য প্রভৃতি মহাত্মাগণ কখনও মাংসাদি ভক্ষণ করিতেন না। স্যার হেনরী টমসনও মাংসাহারের বিরুদ্ধে অনেক প্রমাণ দেখাইয়া গিয়াছেন।

অতএব কেবল আমরা ধর্মের দিক দিয়াই মাংসাহারের অপকারিতা দেখাইতেছি, তাহা নহে। জীবের প্রতি নির্দয় হইয়া তাহাদিগকে বিনাশ করা আমরা যেমন দুঃখজনক মনে করি তেমনি ঐ সকল পশু মাংস ভক্ষণও আমাদের পক্ষে বড়ই ক্ষতিজনক। অতএব হে ভাইগণ, বন্ধুগণ, হে সুখশান্তি প্রয়াসী হিন্দুগণ, হে ধার্মিকগণ, আপনারা বিচারপূর্বক মাংসাদি পরিত্যাগ করিয়া স্বীয় হৃদয়ের উন্নতি করুন এবং ভগবানের আশীর্বাদ লাভ করুন এই আমরা প্রার্থনা করি।

চাহি যে যে দয়াময় তোমাকে ও আমাকে, পশুকে ও মানবকে সৃজন করিয়াছেন, তাহার হিসাবে, আমি ও তুমি, পশু ও মানবে তিনি সৃষ্টিতে কোন পার্থক্য করিয়াছেন কি? তিনি পরম দয়ালু তিনি সর্বজীবে সমভাবে দয়া করেন। অতএব আমরা যে কোন ধর্ম লাভ করিবার জন্য পশু বধ করি তাহা জানি না।

এখন মাংস ভক্ষণ সম্বন্ধে দুই একটী কথা বলিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ করিব।

পূর্বেই বলিয়াছি, ধর্মের দিক দিয়া দেখিতে গেলে দেখা যায় কোন ধর্মতেই পশুবধ যুক্তিসিদ্ধ বলিয়া প্রচার করেন নাই।

বিজ্ঞানের হিসাবে দেখিতে গেলে দেখা যায়, পশুমাংস ভক্ষণ দ্বারা আমরা উপকৃত না হইয়া বরং অধিকতর অপকৃত হইয়া থাকি।

যাহারা দীর্ঘজীবন লাভ করিতে চাহেন এবং সবল ও নিরোগ হইতে ইচ্ছা করেন তাহারা ইহা বেশ মনে রাখিবেন যে ক্ষিতি অপ্ তেজ মরুৎ ব্যোম হইতে জীবদেহ সৃষ্ট হইয়াছে। ঐ সকল জীবদেহ বায়ু পিত্ত কফ সমবায়ে পরিপুষ্ট এবং বিনষ্ট হয়। পশুমাংস ভক্ষণ দ্বারা ঐ সকল বায়ু পিত্ত কফাদি আশ্রিত জীবদেহই আমরা ভক্ষণ করিয়া তাহার দোষগুণ শরীরে গ্রহণ করি। বায়ু পিত্তের বিকৃতি না হইলে জীব কখনও মরে না এবং মৃতদেহের মাংসগুলি অতিশয় দুর্গন্ধ ও বিষাদযুক্ত হয় অতএব ঐ বায়ু পিত্ত কফাদি দোষঘটিত দেহ ভক্ষণ করিতে কি আমাদের ঘৃণা হওয়া উচিত নহে?

মাংস ও মৎস্যাদি ভক্ষণ দ্বারাই মানুষের ভেতরে রোগ অত্যন্ত বাড়িয়া গিয়াছে। প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য সকল মনিষীগণেরই এই মত। আমরা মানুষের খাদ্য নামক গ্রন্থে তাহা ব্যাখ্যা করিব।

পাশ্চাত্য ডাক্তারগণের মধ্যে সিডনী সাহেব বলেন একমাত্র মৎস্য মাংস ভক্ষণের জন্যই মানুষের মধ্যে অনেক কঠিন রোগ উৎপন্ন হয়। মিঃ বিয়ার্ড মহাশয় মাংস ভক্ষণের অপকারিতা প্রমাণ করিতে প্রয়াসী হইয়া অনেকগুলি নিরামিষাশী ব্যক্তির দৃষ্টান্ত দেখান। তিনি আপনার কাগজে একাশী বৎসরের

শ্রীশ্রী মা।

সম্মুখে শারদীয় পূজা আসিতেছে। আপনাদিগের গৃহে গৃহে মা জগ আগমন হইবে। আপনারা এবার বিশুদ্ধচিত্তে পবিত্রভাবে হাঁসের অপবিত্রকর বলি না দিয়া এবার মায়ের পূজা করুন দেখিবেন কত আ তৃপ্তি এবং মায়ের আশীর্বাদেও আপনাদের সর্বাঙ্গীন শান্তি হইবে।

হিংসা হইতে কল্যাণ হয় না। হিংসা হইতে চিত্তের মলিনতা আ হিংসা হইতে মনের প্রেম কমিয়া যায়। এবং হিংসা হইতেই রোগ নানা আনয়ন করে। হিংসা সর্বদা নিন্দনীয় ও অমঙ্গলজনক। অতএব আসুন সর্বজীবকে অভয় দিয়া ও দয়া দিয়া ভগবানের শরণাগত হইয়া কৃপা করিয়া সর্বজীবের মঙ্গল করুন ইহাই প্রার্থনা করি।—

১লা ভাদ্র, ১৩২০ সাল কলিকা



বিশেষ দ্রষ্টব্য —অনুগ্রহ করিয়া পাঠান্তে অপরকে পড়িতে দিয়া বাধিত করিবেন।

বিনীত—

তার

[illegible]

[illegible]

[illegible] ১৩৩০ সাল [illegible]